

८९ स्वर्णमार्गोत्पत्तिपावरो हण

आभार मन्त्रालय
ADIA ARCHIVES

3233

श्रीनारायणायनमः॥ ॥ ततः कुलम्भनविधिवत् आचमनं॥ ३॥ स्नानादि चन्दनमूकतः पू
ष्य॥ चरुमभि॥ कृद्रुर्धिकाहवं कृद्रुं चिकामसिस्तमरुमं॥ मनांसन्यादिः देवस्य संसृतप्रति
गृह्णां॥ ॥ पातायनमालकाचायः गायहलं॥ ॥ ततः पूजतं॥ ॥ वाक्॥ ॐ श्रुत्यादि॥ काश्च
प॥ गम्य श्रुतकनाम श्रुतदादीनां सभक्ति कपतिवान् कृद्रुं वातां यथा॥ काश्च कृद्रुं कृद्रुं कृद्रुं कृद्रुं
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः॥ देवता प्रतिवार्षिकस्वर्गजातीपूष्यावनाहन पूजा कृद्रुं श्रीसूर्याय नमः॥ दे
मर्चनमः॥ ॐ श्रुत्यं॥ पूष्यं नमः॥ माहन्धकारेयादि लास्त्रनाय नमः॥ दमासनं नमः॥ पूष्यं नमः
॥ लास्त्रनाय नमः॥ ॥ आचमनं॥ ३॥ पुनरुत्तमस्तोत्रं॥ श्रुतधुमधुलाकारेति॥ ॥ ततः कुद
दनमस्तोत्रं॥ गंगाय नमः॥ अत्रत॥ ॐ पुनरुत्तमस्तोत्रं॥ खवत्त॥ ॐ श्रीसः नारायणाय नमः॥ दे
वतायेनमः॥ दमा॥ ३॥ अत्रत॥ गंगाय नमः॥ लास्त्रनाय नमः॥ दमा॥ ३॥ अत्रत॥ गंगाय नमः॥

[illegible]

नाय नमः॥ स्वाय ॥ ॐ मों ॐ माध माधवा मिश्राय नमः॥ नूयग ॥ ॐ हं ॐ एत विन्दाय वन्याय
नमः॥ ककुमा ल ॥ ॐ गें ॐ विष्णवे नमः॥ ऊवव्यका ॥ ॐ वे ॐ सुदताय लग्नय नमः॥ ऊव्रव
कलि ॥ ॐ ते ॐ प्रिविकनाय विवम्भते नमः॥ ऊव्रगलपत ॥ ॐ वो ॐ वाम नाय मिश्राय नमः॥ खक्र
व्यका ॥ ॐ सू ॐ श्रीधराय पूजित नमः॥ खव्रवकलि ॥ ॐ दं ॐ द्विषीक्ष्माय पर्यत्याय नमः॥ खव्रग
लपत ॥ ॐ वो ॐ पद्मनाभाय त्वष्ट्रे नमः॥ ऊलधू ॥ ॐ ये ॐ शृङ्गादाय विष्णवे नमः॥ मिखा
गल्लका ॥ ॐ त मोरुग वने वासुदेवाय नमः॥ भिजा ॥ ॐ की ॐ सप्तमातायाय साय विष्णवे नमः॥
स्वाहा ॥ अतस्तुलम कुं व्यापक पि वाने नमः॥ थत तुलम कुं कुं ति स्पीडति तं स्वपाल
पिय ॥ ॐ ति त्याह ॥ ॥ तत ॥ अखस्का पत ॥ सोइ इत का . हा म . गुल उ . थत तथा व . आधिमान
क्कादि सु के मे थ व गुलि पूजाया या ॥ गायत्री ॥ ॐ नारायणाय विष्णवे लक्ष्मी सहिताय धीमहीत नो

विष्णुप्रसादया ॥ ३ ॥ ध्वजतद्वपुजा तुमुमादिहाय ॥ ॥ आत्मपूजा ॥ ॐ क्रीं सु ४ मूलव. चन्दना
दिभूक्तगण्डलितय ॥ ॥ तग ४ पूजत ॥ ॐ आभानभक्त्यादिस्थानम ॥ ॐ क्रीं ग नूतातनायन
म ॥ ॐ कर्मातनायनम ॥ ध्वजत ॥ पंचास्य द्वादशभुक्तं ग नूतचरवमम ॥ सर्वातनम ॥ ॐ
राशं पूर्ववक्तुं तुहातिता ॥ दक्षिणचवना हस्यं तिलचनस्य ॥ ॐ क्रीं क मनी वक्तुं पश्चि
मनी लस्यामक ॥ ॐ च व म हा ॥ ध्वजत ॥ जगत्ख ॥ ॐ नू म भुक्तं ॥ मरुचकं गदापन्न. मक्षिंवार
यदक्षकं ॥ पिभूतं पूरुक्तं मस्य ॥ सुधचवतदधुक्तं ॥ वासातुक्काजयादवी. वनदातयपायिका
॥ सर्वातनम ॥ ॐ गी दिव्यत प्रह्ला चना ॥ ग नूतं च ॥ ॐ देवा. नाग हाता नूजा वस ॥ ॐ
कृत्यं गथापन्न. हस्तं कलियुक्तं ॥ ॐ वामकनधत्वा. कनतंच स ॥ ॐ म ॥ ॐ वक्तुं यामहादवी. ना
गायधं स ॥ ॐ सर्वभूतहृदय. मीधनभयनाशितं ॥ ॐ तिष्ठात ॥ ॥ तगवाहन ॥ ॐ क्रीं सु ४ लक्ष्मी सहित

[illegible]

यश॥ ॐ लभविन्दायश॥ ॐ विष्णवे श॥ ॐ मधुसूदनायश॥ ॐ प्रविक्रमायश॥ ॐ वामनायश॥ ॐ श्रीधरायश॥ ॐ ह
+ श्रीकृष्णायश॥ ॐ पद्मनाभायश॥ ॐ दामोदरायश॥ ॐ संकर्षणायश॥ ॐ वासुदेवायश॥ ॐ प्रद्युम्ननायश॥ ॐ श्रीनि
रुद्रायश॥ ॐ पूनप्राकृमायश॥ ॐ मूढाकृजायश॥ ॐ नृसिंहायश॥ ॐ मूर्धन्यायश॥ ॐ कृताईनायश॥ ॐ ह्ययश
॥ ॐ विष्णवे श॥ ॐ द्वादशमालाकपालेष्टातमः॥ ॥ स्तोतादि धूपदीपनेवय रुलतान्मूलादिप्रतिष्ठा॥ या
वहाहात्कृत्यादि॥ ॥ आप॥ ॐ प्रोक्तं स्वाहा॥ १०॥ मधुललाया॥ ॐ मूर्खं मधुलाकानति॥ ॐ नमो
हगवतं वासुदेवाय॥ ॥ काकाकानं उज्जगमयतं पद्मनाभं नमः॥ विष्णुमन्त्रं गगनसुदमं प्रचवर्णं भुक्तं॥
लक्ष्मीकानं कमलतयनं यागिहृद्यातगम्यं वन्दविष्णुवर्हयहनर्षं सर्वलोकेकनाथं॥ रुतता विष्णुपं
कल विष्णुहृत्ताम कवचकाप्रदानं॥ ॐ हृदयनमस्तुये कलदवनमानमः॥ स्तोतदेवग्रहास
र्वपूजां गृह्णतमानुता॥ यथावाच्य्यादि॥ मृपताध्यादि॥ पूर्ववत्वाकं मृगगन्धपूषा धूपदीपाञ्चन

पूजाविधितत्त्वविधिपानिपूर्वमनु॥ यथाश्रद्धादक्षिणा॥ ॥०॥ गितानायमपूजा॥ ॥ ततश्चैवैकवीरुज
नं॥ कलामधतं॥ वैकुण्ठवन्दनद्वयेश॥ धनमद्रा॥ ॥ साचमनं॥ स्नानयाचकं॥ लेखा॥ गंगाया॥ साइश॥ ओष
धीषूपयाहो॥ दिव्याकृतिकृतमिकं॥ पयाधस्तु॥ पवित्रं॥ कीनस्तानं प्ररक्षीकतां॥ धलि॥ गुप्तश्चतायादधि
पूष्य॥ मत्तापतिपत्रश्चतं॥ तद्वधस्तुपयामित्वा॥ सर्वपापकथार्थकं॥ घृता॥ कपिलायाघृतं॥ अष्टं॥ महावच
यद्रुवं॥ लात्तनंदवतापूष्यं॥ स्नानार्थं॥ होक्यामितं॥ मधु॥ मधैकिकस्तुतं॥ दवापिष्टप्रसादकं॥ पापोघताम
नार्थत्वे॥ मधुनास्तुपयाम्यहं॥ लकन॥ नानेकस्तुतं॥ सकलागुर्वत्वाइकं॥ कामाप्रलम्बप्राप्त्यर्थं॥ तत्तानं
होक्यामितं॥ तुला॥ तुलाभाकिं॥ भिवानां॥ तत्तानिलितनूकमं॥ मृद्धि॥ तिद्धिप्रदं॥ पूष्यं॥ मलित्तानदद्याम्यहं
॥ पूत॥ कलस्तानं॥ श्रीस्तुतं॥ दवहीतकतिलं॥ चंता॥ ०००॥ दमलयस्तुतं॥ तिद्धन॥ पूष्यं॥ वैदं॥ नकप्रस्थानि
॥ श्रुतं॥ श्रुतं॥ सर्ववीरम॥ दृष्टि॥ स्वर्गमश्चपातालं॥ चउर्ध्वमस्तुतं॥ दिव्यचक्रहलप्राफ॥ दृष्टि

कंठो कया मितं ॥ ऊंका ॥ उपवीतं निदं ह्यं अनरुद्रस्य लां कृतं ॥ गृहाय वीतजागस्य रुलप्राफं च ऊत्तम
॥ मूद्रवा ॥ स्कुलुनकलिमिथ्याद्रु ॥ अतपनमंतवत् ॥ वक्रहातिर्कवंधानं चिन्तना ऊत्तयानिच ॥ न
साक ॥ कस्तुर्यगुनकदातं सिद्धकृद्गुनकादिकं ॥ डाजापूनात्मकंगन्धं गृहाय वीतनायिक ॥ स्वान ॥ नाता
पूषाति ॥ मालस्वान ॥ मालपं नाता विचित्रं वर्धमानत्यतिर्कवं ॥ अनापूनात्मकं वीत गृहात नंद रुलाफय
॥ मूलत ॥ अनरुद्रकला अनरुद्रस्य लां कृतं च तदात्तन ॥ उपवीतं मया वीत गृहातां च ह्यतिद्वय ॥ कथं पताका
॥ कथं धियुगलं चैव पताका वर्धमानं यत् ॥ दिव्यरुद्र रुलप्राफं गृहाय अनमं ध्वनी ॥ पंचपताका ॥
पताका पंचवर्धकं पंचतत्वात्मरूपकं ॥ पंचवर्ग रुलप्रदं ॥ ऊं कया मितपत्रं ध्वनी ॥ चक्रमिड ॥ कुरुधि
का रुवच ॥ पदवास्तववाय ॥ मूलत दृष्टं कृतयुगलं मनुसिद्धं न जायते ॥ यवसुमित्रमामा नंतं ॥ त
नुनापीतवास्तुक ॥ ॥ सर्वसिद्धि कनप्राफं सर्वपाप कया पत्रं ॥ सर्वदा घहनं भाकिं पीतवास्तु

गृहानमः॥ गाय हा ल ॥ लाजा प्रदं पतं सस्यं नाश प्राफिरु लप्रदं ॥ गृह धद हिम विरुं भुंका
क्रि वपु ४ प्रहा ॥ ॥ नै वयं वलि ग्व उजा वलि वाय ॥ चाले दारु स विष चतस्त्वा न ऊ ऊ म का ग
य ॥ ॥ तत ४ पूजतं ॥ ॥ म्रयादि ॥ का म्र प र म य म्र म्र क नाम म्र म्र दा दी नां स म्र क प नि
वा न क दं वा नां य थ म्र म्र का क उ रु रु ल प्रा क्य थं श्री म ल्कि र्वे क्वी द वी प्र ति वा र्षि क स्व र्क
जा ती पू ष्या व ना ह न का ग व लि स हि त पू जा क र्त्तुं धा र्म यो य ष्ठ द म धं न म ॥ पू ष्या न म ४
॥ मा हा न्ध का ग ति ॥ रा स्त ना य ष्ठ द मा स त न म ॥ पू ष्या २॥ धू प २॥ पू जा रा धु क म धु लं त्य
स्त्वा प १० ॥ ग न दू स ती ति ॥ सि धि न मु क्रि या न क ति ॥ य थ वा ध प्र हा ना धं ति ॥ वा क्य पूर्व
वत् ॥ क म धु ल पू ष्या रा ज तं न म स्त ना मि ॥ ॥ पू जा ॥ ॥ म्रा व म न ३ ॥ म्र या दि वा क्य पूर्व वत् ॥ उ
न न म स्त ना न म्रा सु त ला ह ले वं ज म्र क र्त्त म्र दा द म्र वा न व न्ध न ग य उ न न म स्त ना न ॥ प्रा धा या

म. न्यासः ॥ ॥ ऊलपात्रपूजा ॥ ॥ निरर्थः ॥ अधन विधिवत् ॥ जै सुता देवी विघ्नहं. समुद्रा रुवी
धीमही. तन्ता नका कि प्रवा दयात् ॥ ॐ श्रानन्दधनाय विघ्नहं. रुधा देवी धीमही. तन्ता च
नानी अधन प्रवा दयात् ॥ मूलतः योनि मूद्रा. ताल प्रय दिग्बन्धन ॥ ॥ छद्दिः ॥ अधन ॥ ॥
ततः ४ मू र्धपात्रपूजा. ततः छद्दिः. श्रात्मपूजा विधिवत् ॥ ॥ माहती साधन ॥ मलिनिलास चक
नतयिल. पात्र चन्दन तयिका. ५ काल लिपितं घट्टी रुका निधाय ॥ चन्दनाक्षतपूजा ॥
देवीस्य ॥ अधन ॥ ॥ हं ॥ हं ॥ वं ॥ क ॥ ॥ ऊलकोलि स्कापयामि ॥ जैः रुयादि ॥ ॥ ॐ ति माहती
पूजा ॥ ॥ मोलती प २० ॥ ॥ पंचवलि विधिः ॥ धूप दीप नैवेद्य. ज्ञाप. स्तोत्र ॥ ॥
श्रीसन्वर् ॥ वलि विंद ॥ ॥ त्रिदेवादि. कां धूदधूमलुनिर्वाद्य पर्यंतं पूजा. वलि. मू
द्रा विंद ॥ ॥ वि. अधन पूजा ॥ गद्य गुर मूल नमस्कान ॥ ॐ गुर ह्या नमः ॥ स्ववत् ॥ गंगा

ॐ
आयनमः॥ ऊब्रस॥ ॐ श्रीवेङ्कटीदेव्ये नमः॥ दथ॥ हतशुद्धि॥ हं सु. धर्कं कुरु लिति मि
वदनापलाक॥ ये ॐ १० गें ०४ वे ३२ वे १० लें ०४ हं ३२॥ हा हं धर्कं कुरु लिति माऊन
कागह्यात्र आधनमंतय॥ थ वरगल सथि सुंप्राधप्रतिष्ठा॥ ॐ श्रीक्रीं हं सु॥ ३॥
न्यासः॥ ॥ अस्य श्रीवेङ्कटीमन्त्रस्य नानंदमणिमन्त्रस्य पूकन्दावेङ्कटीदेवता उं वीजं
वां भक्तिः नमः कीलकं च उर्वरसाधने विनियोगः॥ ॥ वीं हृदयादिकनांग न्यासः॥ ॥
ततः मातृका न्यासः॥ हाऊलं प्र॥ ॐ मूय श्रीमातृका न्यासस्य प्रकाम प्रिग ययी कन्दामातृ
कासनस्वतीदेवता हला वीजं स्वनाभकय मूयैकं तिकीलकं नमः अगीगं शुद्धार्थं उपविनि
योगः॥ ॥ जप्यादित्यासः॥ ॐ मूय श्रीमातृका न्यासस्य प्रकाम प्रीय नमः॥ भित्ति॥ ग
ययी कन्दसनमः॥ सूष॥ मातृकासनस्वतीदेवता ये नमः॥ रुदि॥ हला वीजाय नमः॥

गुह्य ॥ स्वनामकथनम ॥ पाद ॥ अथ कति कीलका यनम ॥ सर्वा ॥ मम अतीत ॥ अ
थु जप विनियोग ॥ हा जलप ॥ ॥ अं कं रं गं घं ङं श्रीं मूं गुं छां यं नम ॥ ॐ वं कं ङं जं अं ॐ ॥
तर्जनीत्यां स्वाहा ॥ उं टं ङं रं ङं डं मध्मायां वषट् ॥ जितं थं दं धं नैवं अनामिकायां हूं ॥ औं पं हूं वे रं मे औं कति छां यं
वो वट् ॥ अं ये नं लं वं हं वे भं हं कं भ ॥ कनक गय छायां अक्राय रुद्र ॥ एवं हं दयादि ॥ ॥ अं नम ॥ क्रांतिका ॥ श्री
नम ॥ स्वा ल वा क ॥ ॐ नम ॥ ऊव निरवा ॥ ॐ नम ॥ ख व निरवा ॥ उं नम ॥ ऊव क्रस्यं ॥ उं नम ॥ ख व क्रस्यं ॥ अं नम
॥ ऊव क्रस्यं ॥ अं नम ॥ ख व क्रस्यं ॥ उं नम ॥ ऊव क्रस्यं ॥ ॐ नम ॥ ख व क्रस्यं ॥ अं नम
॥ उं नम ॥ कथं क्रस्यं ॥ उं नम ॥ थथु वा ॥ उं नम ॥ कथं वा ॥ अं नम ॥ मिया ॥ अं नम ॥ थका ॥ कं नम ॥ ऊव
वाह ॥ खं नम ॥ ऊव चल्या ॥ गं नम ॥ ऊव कचला ॥ घं नम ॥ ऊव दला ॥ ङं नम ॥ ऊव लाहा न पचिं ॥ वं नम
॥ ख व वाहा ॥ कं नम ॥ ख व चल्या ॥ उं नम ॥ ख व काचला ॥ मं नम ॥ ख व दला ॥ अं नम ॥ ख व लाहा न प

[illegible]



पाप॥ ॥ आवाहना विंश मुं॥ श्रीवेङ्कटीदवीं हग
 क२यादि संख म३॥ ॥ प्रागप्रतिष्ठा॥ श्री
 कोकोहं ४ मुं॥ श्रीवेङ्कटीदद्या प्राधा ॥ ह प्राधा ॥
 श्रीकोकोहं ३ स ४ मुं॥ श्रीवेङ्कटीदद्या जीवं ० ० ह
 तिष्ठ॥ श्रीकोकोहं ३ स ४ मुं॥ श्रीवेङ्कटीदद्या
 सर्वद्रिया मि ४॥ श्रीकोकोहं ३ ४ मुं॥ श्रीवेङ्कटी
 दद्या वाचन थरु ॥ अया प्राधा जी ३ व ० ० हा ग य
 ह खं चि नं तिष्ठ तु स्वाहा ॥ ॥ देवीसर्वा ॥ वैश्व ४ म
 प्राय ह् द न्या स ४॥ ॥ प्रायादि तय ॥ मुं॥ प्र न त्या
 ३

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वलि मद्रा विंदू ॥ ॥ बालको मानि पूजतं ॥ न्यासः ॥ आसुत अंजलि मद्रा वलि विंदू ॥ ॥ तथा वलि प्रदातं ॥
दगुल वलि प्रदात ॥ ॥ तथा हनय वलि ॥ जे ० सर्व पी ० प्र पी भति दान प्रदान भवव ॥ दयाप दय सं दा हा
सर्व दिग्गग सुक्ति ता ॥ योगिनी याग वीन द्रा सर्व तय स माग ता ॥ ०० दं पर्व महा चक्र श्री नास्थ
वन दाम म ॥ य ह क्य सा स न द वी गुन पादा च तन ता ॥ स र्व सिद्धि प्र सा दो म द वी त पां र वें ल दा ॥ वी ना
तां यागिनी तां च ये वि प्र की म ही त ल ॥ तत गत क म लिंद वी स म या चाल म ल क ॥ अति सु गि म त ॥
पू विं मां स म दा स्ति जी वि तं ॥ नि क र य तु दृ ष्टा तां योगिनी ग द स क ल ॥ ॐ काना दि सूर्य पी अ म्र य
ता ला प्र की र्ता ॥ ॥ डा च धी धा उ स दा हा द ता र वि द ता र च ॥ म ही पा ता ल प्र क्ता ॥ ७७ सर्व स्का ता क
न प्र च ॥ योगिनी याग यू का ला स कृ ति सं ति सा ध का ॥ वी न क र्म सु वी न द्रा स र्वा त वृ त्ति दे व ता ॥ ॥ ति
का अ पू य का चार्या हा ध का दि गि ता यि त ॥ त ग न वा थ ग्र म न वा नृत वा वा स नि द य ॥ वा पी रू पे क

ASHA ARCHIVES 3233